प्याज़

इदरीस शाह

प्याज़

इदरीस शाह

एक ज़माना ऐसा था जब उस शहर के
लोगों ने पहले प्याज़ नहीं देखा था.

फिर एक दिन एक मुसाफिर शहर के मुख्य चौक में एक प्याज़ रखकर चला गया.

शहर के निवासी उस नई चीज़ को देखकर बहुत उत्सुक हुए.

वो एक तरह की सब्ज़ी थी इतना तो लोग समझ गए.

पर उसके बारे में वे और जानना चाहते थे.

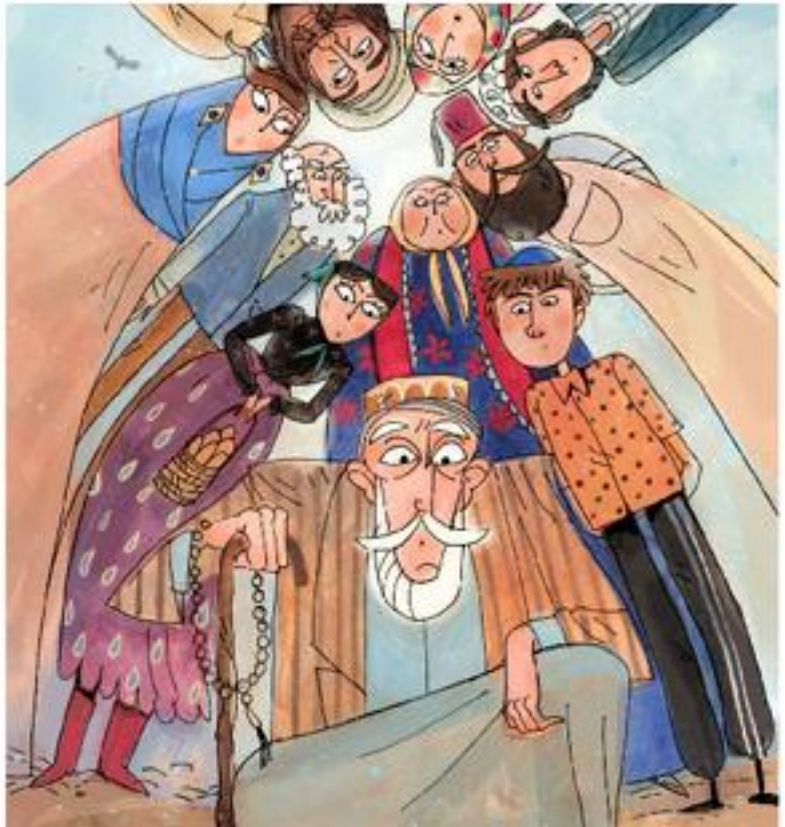

इत्तिफाक से जो आदमी प्याज़ के पास सबसे पहले पहुंचा उसे खांसी आ गई.

वो दौड़ा-दौड़ा गया और उसने लोगों को
बताया की प्याज़ से खांसी आती है.

जब दूसरा आदमी प्याज़ के पास गया तो
उसने प्याज़ की तेज़ खुशबू सूंघी.

"अगर उसके बाहर इतनी तेज़ गंध है, तो अंदर की खुशबू बिल्कुल बर्दाश्त के बाहर होगी," उसने कहा.

इसलिए वो प्याज़ को वहीं छोड़कर चला गया.

तीसरा आदमी कुछ ज़्यादा बहादुर था. उसने प्याज़ को काटा.

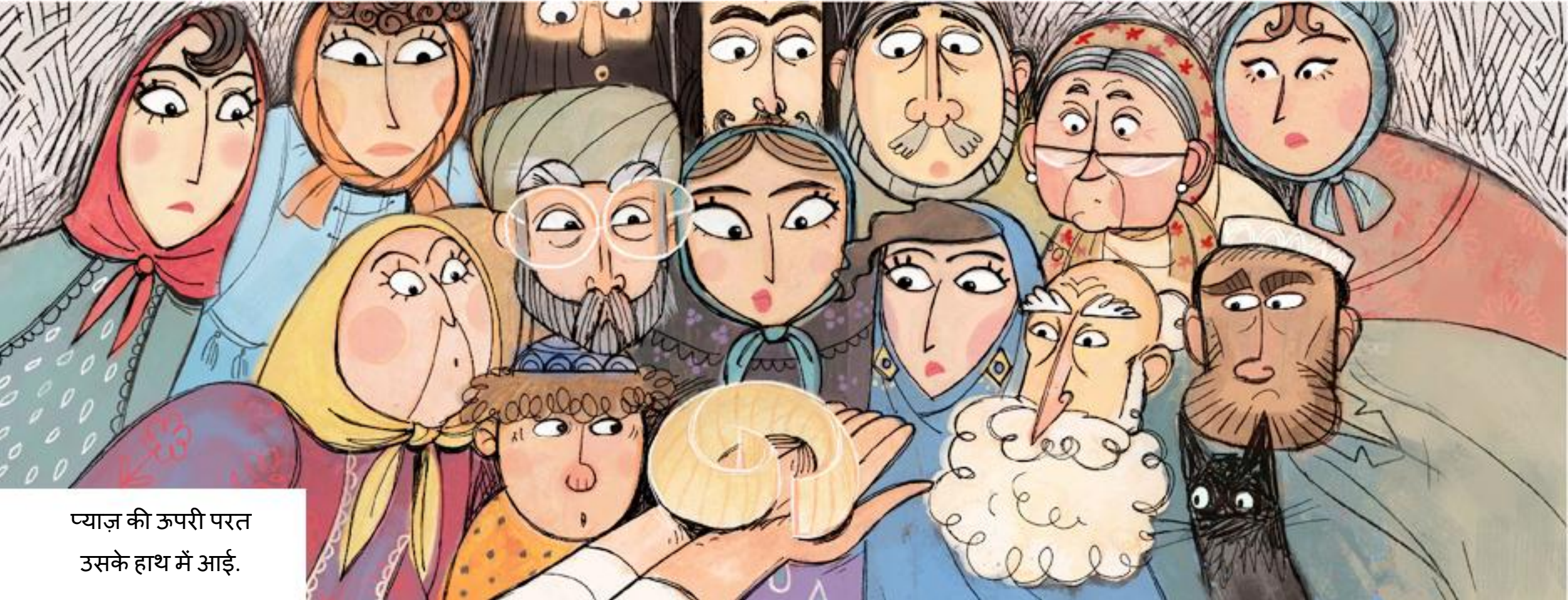

प्याज़ की ऊपरी परत
उसके हाथ में आई.

"यह तो बड़े गज़ब की चीज़ है," उसने भीड़ को बताया.
"इसमें जादुई गुण हैं. आप चाहें तो उसकी ऊपर की परतें छील सकते हैं.
पर उसके बाद भी अंदर के हिस्से का आकार वही रहेगा!"

उसके बाद के बहादुर व्यक्ति ने प्याज़ की परतों को छीला.

फिर उसने उसे पकाया.

उसे पका प्याज़ बेहद स्वादिष्ट लगा!

पका प्याज़ इतना स्वादिष्ट था कि जल्द ही
उस महिला की शोहरत चारों ओर फ़ैल गई.
फिर लोग उससे वो कला सीखने आने लगे.

"प्याज़ बहुत स्वादिष्ट है,
उसकी जितनी परतें चाहें
छीलो, फिर भी उसके नीचे एक
और तह मिलेगी," औरत और
शहरवासियों ने कहा.

"पर छीलने से वो छोटा होता जाता है,"
किसी ने टिप्पिणी की.

"यह बकवास है," बावर्ची और शहरवासी चिल्लाए. "यह तुम्हारी दृष्टि का भ्रम है."

उसका कारण था कि वे चाहते थे कि वो प्याज़ हमेशा बना रहे, कभी ख़त्म न हो.

पर जब प्याज़ की अंतिम परत छीली गई....

..... फिर सब लोग मिलकर चिल्लाए :

"यह प्याज़ बड़ी गज़ब की चीज़ है पर साथ में बड़ा ज़ालिम भी है."

फिर उन्होंने अपने हाथों से प्याज़ का रस पोछा

और एक-दूसरे से अपनी सहमति जताई.....

..... और शायद इसमें ही
उनकी समझदारी थी .....

..... और शहर के लोग .....

..... क़ाफी सोचने-विचारने के बाद वो इस नतीजे पर पहुंचे....

कि वे बिना प्याज़ के ही ज़्यादा बेहतर थे!

अंत